ऋषिकेश। विधायक प्रेम अग्रवाल अपने विचार व्यक्त करते हुए। साथ हैं पूर्व राज्यमंत्री अनिता वशिष्ठ तथा ब्र.कु.आरती।

बॉगरमऊ-उ.प्र.। सांसद अन्नू टण्डन से आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा करते हुए ब्र.कु.सरला।

परमात्मा को सन्मुख ... - पेज 5 का शेष

कुछ लोग बाहर से आते हैं उस समय आकर सेवा कर सकते हैं इसलिए बाबा ने मुझे मुम्बई में ही रखा। लेकिन बाबा के अव्यक्त होने के बाद दादी प्रकाशमणि जी, दीदी मनमोहिनी जी तथा अन्य दादियों ने मीटिंग में यह तय किया कि मुझे मुम्बई से माऊंट आबू बुलाया जाए और यहाँ का ऑफिशियल कारोबार संभालने को दिया जाए। मैं इस बात को पहले थोड़ा समझ नहीं पाया था क्योंकि माऊंट आबू का म्यूजियम बनवाने के बाद मैं वापिस मुम्बई गया था और फिर 1970 में बाबा से पूछने के बाद मैं मुम्बई से माऊंट आबू आया। बाबा ने कहा था कि दादियां कहती हैं तो थोड़ा एक महीने तक ट्रायल करके देखो तो वो ट्रायल अभी तक चल रहा है।

प्रश्न: जब आपके कारोबार में कोई बात आती है तो आप स्वयं को हल्का करने के लिए एक गीत गाते हैं-किसने यह सब खेल रचाया। तो इस तरह की परिस्थितियों में आप और क्या करते हैं?

उत्तर: मैं अपने मन को सदा ही हल्का रखता हूं क्योंकि मैंने अपने मन में यह स्वीकार किया हुआ है कि यह कार्य किसी व्यक्ति का नहीं है ये परमपिता परमात्मा का कार्य है जिन्होंने ब्रह्मा बाबा को निमित्त बना के इस महान यज्ञ की स्थापना की और इसको बहुत ही सुचारु रूप से चलाया और बाद में दादी प्रकाशमणि द्वारा तथा अब दादी जानकी तथा दादी गुल्ज़ार जी के द्वारा इतने सुंदर ढ़ंग से चला रहे हैं और बाबा ने खास कहा कि ये यज्ञ शिवबाबा का है और बाबा स्वयं डायरेक्शन देते रहेंगे। हम तो बाबा की श्रीमत को आगे रखते हुए उसी अनुसार चलते रहते हैं और बड़ा ही उसमें आनंद आता है तथा निमित्त भाव से अपना कार्य करते हैं। भले कोई टाइटल हमें यज्ञ की तरफ से दिए गए हों वो टाइटल हमारे लिए मायने नहीं रखते हैं वो तो सेवा के अर्थ है बाकि हम यही मानते हैं कि करन-करावनहार हमसे करवा रहा है, हमारा भाग्य बना रहा है।

प्रश्न: आने वाले नये साल और स्मृति दिवस पर सभी के लिए विशेष आप क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर: स्मृति दिवस और नये वर्ष के संबंध से एक विशेष बात जो बाबा की तरफ से और दादी गुल्ज़ार जी, दादी जानकी जी की तरफ से भी है कि ईश्वरीय सेवा का जो विशेष लक्ष्य है उसका आधार हम सब बाबा के बच्चे हैं। हम सबकी अगर स्वयं की स्थिति बहुत ऊंचाई में होगी, बहुत श्रेष्ठ, दिव्य, योगयुक्त, प्रेमयुक्त, शांतियुक्त, आनंदयुक्त होगी तो उससे सेवाओं में हर कदम पर हमें सफलता मिलेगी। और बाबा के कार्य को सुचारु रूप से चलाना और स्थापना के लक्ष्य को जल्दी से जल्दी हम पूरा कर सकें उसके लिए हमें हर सेकेण्ड अपने मन के संकल्पों पर बहुत-बहुत अटेन्शन देने के लिए बाबा के द्वारा ईशारे मिले हुए हैं और मिलते रहते हैं तो लक्ष्य यही रहता है कि हम अपने संकल्पों को बहुत-बहुत श्रेष्ठ बनाकर के सबके प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना का संकल्प रखें और अपनी स्थिति को हमेशा शक्तिशाली बनाकर के चलें इसी में सबका कल्याण है।

सदा मुस्कराइये... - पेज 6 का शेष

फिर भी विनाशी है। सुंदरता बनी रहने के लिए रोज़ मेकअप करना पड़ता है। खूबसूरत चेहरे के बावजूद भी अगर मीठी मुस्कान न हो तो जैसे चेहरे की रौनक ही चली जाती है। वास्तव में चेहरे की सच्ची सुंदरता है– मीठी मुस्कान, जो हमारी नैचुरल ब्यूटी है। इसके लिए मेकअप पर खर्चा भी नहीं करना पड़ता। आपकी मीठी मुस्कान ही चेहरे की रौनक है। मुस्कराता चेहरा और प्रसन्नता से दमकती आँखें, भला कौन प्रभावित नहीं होता? मुस्कान से और प्रसन्न चेहरे से आपका व्यक्तित्व आकर्षक बन जाता है, यही सच्ची पर्सनैलिटी है।

मुस्कान – मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए

मनोविज्ञान का मानना है कि 90 प्रतिशत बीमारियों के बढ़ने का कारण मन की कमज़ोरी है। कमज़ोर-निगेटिव विचारों से मन कमज़ोर एवं उदास हो जाता है। जिससे हमारी कई सारी आंतरिक शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं, जिसका हमारे शरीर पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए आप मन को प्रसन्न एवं आनंदित रखें। यह हास्य और मुस्कान हमारे सेहत के लिए ही नहीं बल्कि मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी बहुत बड़ा टॉनिक है। विटामिन की गोलियां और ताकत की सैकड़ों दवाईयों से कहीं बेहतर है – एक मीठी मुस्कान, खिलखिलाहट और उन्मुक्त हास्य। स्वास्थ्य विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि प्रसन्नता प्रत्येक बीमारी की रामबाण दवाई है। मुस्कराने का, हमारे शरीर की सभी प्रणालियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और मस्तिष्क भी सक्रिय रहता है। इसलिए सदैव प्रसन्न मुद्रा में रहना चाहिए, जिससे शरीर के अव्यव बहुत अच्छी तरह कार्य करते हैं। **''सदा खुश रहो - मुस्कराते रहो, खजाना खुशी का लुटाते रहो।''**

ब्रह्मा बाबा - एक.. -पेज 2 का शेष

न केवल उन्हें आध्यात्मिक आचारों की नई-नई ऊंचाईयों का ज्ञान था, बल्कि वे अद्भुत सादगी और दुर्लभ कुशलता के साथ इन सिद्धांतों को क्रियान्वित कर सकते थे। इस प्रकार वे शिव बाबा के सच्चे व्याख्याकार थे और शिव बाबा के मन, वचन और कर्म आदि के सर्वोत्तम व्याख्याता थे।

उनकी अभिव्यंजना-शैली अत्यंत गूढ़ विषय को भी सरल बना देती थी। उन्हें विभिन्न लोगों को विभिन्न स्तरों पर संभाषण करने की दुर्लभ प्रतिभा प्राप्त थी। वे बच्चों को भी उतनी ही आसानी से सिखा सकते थे जितनी आसानी से स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों को सिखा सकते थे। वे साधारण लोगों और विद्वानों सभी को समान रूप से इतने प्रभावी ढ़ंग से संबोधित कर सकते थे कि उनके मन आलोकित हो उठते थे। वे गहन विचार, परिशुद्ध अभिव्यक्ति, दृढ़ विश्वास और सर्वोपरि प्रयोजन की ईमानदारी की अपनी शक्ति और व्यवहार की निष्ठा, मनुष्यों को समझने की गहराई और प्रेमपूर्ण स्वभाव के जरिये लोगों के दिलों में अपनी बात बिठा देते थे। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि अनेक पुरुषों और महिलाओं ने गहरे मानसिक संताप की अवस्था में बाबा के दर्शन किए और बाबा के वचनों तथा कार्यों से उन हताश और निराश लोगों को राहत मिली। ऐसे भी अनेक उदाहरण हैं कि विद्वान जटिल प्रश्नों को लेकर बाबा के पास आये और बाबा के संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तरों ने उनकी मनोग्रंथियों को खोलकर उनका रूपान्तरण कर दिया।

बाबा के शब्दों में एक विशेष जादू था और वह दिन दूर नहीं है जब उनकी स्पष्ट प्रेरक वाणी को गहन आध्यात्मिक प्रज्ञान की अभिव्यक्ति माना जाएगा।

स्नेहमय व्यक्तित्व तथा अथक कार्यकर्त्ता

उनमें न केवल उच्च प्रज्ञा थी, बल्कि व्यक्तित्व के वे सभी गुण थे जो किसी व्यक्ति को सभी बच्चों, पुरुषों, महिलाओं और युवकों का स्नेहमान बना देते हैं। जो भी लोग उनसे मिलते थे, उन्हें ऐसा लगता था कि वे बाबा के सर्वाधिक प्रिय पात्र हैं। इसलिए लोगों के हृदय में बाबा के प्रति अतिशय अनुराग उत्पन्न हो गया था। इस प्रकार बाबा का हृदय सर्वाधिक प्रेममय था। वे मानवता के सच्चे प्रेमी थे और हृदय में पीड़ित लोगों के प्रति संवेदना थी। इसी कारण वे दिन में उन्नीस घंटे या बीस घंटे अथक कार्य करते थे। ऐसे मानवता उधारक प्राण बाबा को 44 स्मृति दिन पर शत: शत नमन।

वाणी से वर्ण का पता चल जाता है

जो सुख आरंभ में विष के समान है अर्थात् जब मनुष्य मेहनत करता है तो मेहनत में उसको कठिनाई का अनुभव होता है। आरंभ में कठिनाई अनुभव होती हो परंतु परिणाम में अमृत के समान है वह आत्मस्वरूप में समाहित बुद्धि, प्रसन्नता, निर्मलता, स्थिरता का सुख, अनुभव करती है, वह सतोगुणी सुख है।

दूसरे प्रकार का जो सुख है राजसी सुख। जो सुख विषय और इंद्रियों के संयोग से उत्पन्न होता है। वह प्रथम तो अमृत समान अनुभव होता परंतु परिणाम में विष तुल्य होता है, वह सुख राजसी सुख है।

जो सुख आत्मोन्नति के प्रति अंधा, प्रारंभ से लेकर अंत तक मोहग्रस्त है और जो आलस्य निंद्रा और प्रमाद से उत्पन्न होता है, वह तामसी सुख है। आलसी व्यक्ति सारा दिन अगर बिस्तर पर पड़ा रहता है, तो वह सुख का अनुभव करता है, लेकिन वह सुख तो तामसी सुख है। तो इस प्रकार, तीन प्रकार के सुख का अनुभव मनुष्य करता है। फिर भगवान ने कहा - पृथ्वी पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में प्रकृति के गुणों के अनुसार ये स्वभाव द्वारा, उत्पन्न गुणों के द्वारा भेद किया जाता है। जैसा जिसका स्वभाव होता है, उस स्वभाव के अनुसार ही भेद किया जाता है। पृथ्वी पर अथवा स्वर्ग के देवताओं में ऐसा कोई प्राणी नहीं है, जो प्रकृति से उत्पन्न इन तीन गुणों से मुक्त हो। तीन गुण कहां न कहां किसी में किस परसेंटेज में, और किसी में कौन सा और किसी में कौन सा अधिक रहता है।

पुरूषार्थ का मतलब ही यह है। पुरूषार्थ माना पुरूष और अर्थ। पुरूष अर्थात् आत्मा। आत्मा की उन्नति अर्थ जितना हम सात्विक

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

प्रकृति को विकसित करते जाते हैं, इसी का नाम पुरूषार्थ है। यह पुरूषार्थ भगवान अर्जुन को भी करने के लिए कहता है और उसे प्रेरित करता है। उसके लक्षण बताए कि चारों वर्ण के लक्षण कौन से हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के। तो शांति प्रियता, आत्मसंयम, तपस्या, पवित्रता, क्षमा भाव, सरलता, सत्यनिष्ठ, ज्ञान-विज्ञान तथा धार्मिकता ये सारे स्वाभाविक गुणों द्वारा ब्राह्मण कर्म करता है। ये ब्राह्मणों के कर्म करने का आधार है।

क्षत्रियों के कर्म करने का आधार कौन सा? वीरता, शक्ति, संकल्प दक्षता, युद्ध में धैर्य, उदारता तथा नेतृत्व ये क्षत्रियों के स्वाभाविक गुण हैं। वैश्यों के गुण कौन से हैं ? कृषि करना, गौ रक्षा तथा व्यापार, ये वैश्यों के स्वाभाविक कर्म होते हैं। शूद्र कर्म कौन से हैं? - श्रम तथा अन्य की सेवा करना। इस प्रकार वो शूद्र माने जाते हैं। आज भले जन्म से इंसान कैसा भी हो? जन्म से कोई ब्राह्मण हो लेकिन अगर उसके कर्म शूद्र के समान हों, तो वो उसी श्रेणी में माना जाता है।

भावार्थ ये है कि हम स्वयं की जितनी उन्नति करना चाहें उतनी कर सकते हैं। गौ रक्षा, कृषि करना, व्यापार ये वैश्य का स्वाभाविक गुण है। व्यापार माना हर बात में बिजनेस होता है। तुम मेरे लिए इतना करो तो मैं तेरे लिए इतना करूंगा। ये भी एक व्यापार है। जहां हम कर्म में भी हिसाब लगाने लगते हैं। मैंने इतना किया तो तुम भी इतना करो, ये हिसाब-किताब नहीं तो क्या है? ये वैश्य वृति नहीं तो क्या है? अगर ब्राह्मण बन करके, वो वैश्यवृति रखने लगे तो वो वैश्य वर्ण में ही चला जाता है। या उसके आगे का जन्म उसी अनुसार वह फाइनल कर लेता है। इसी तरह अगर व्यक्ति के अंदर युद्ध करने की या संघर्ष, सबके साथ युद्ध में बार-बार आ जाता है, तो वह क्षत्रियों के गुण उसके जीवन में आ गये। इस प्रकार के गुण स्वाभाविक रीति से व्यक्ति को उसी वर्ण के अंदर ले जाता है। इसलिए दुनिया में भी ये कहावत है - वाणी से वर्ण। व्यक्ति की वाणी से पता चलता है कि ये किस वर्ण का है। आगे के जन्म भी उसके किस वर्ण के होंगे या पिछला जन्म भी उसका किस वर्ण का होगा, जो अभी तक वो संस्कार उसके अंदर स्पष्ट दिखाई देते हैं। मनुष्य को अपने अंदर परिवर्तन करना चाहिए। (क्रमश:)